॥ श्रीरस्तु ॥

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः हरिः ॐ॥
श्री जगन्नाथ दास राय विरचित श्रीमद्धरि कथामृत सार

जलजेष्ट निभाकारं जगदीश पदाश्रयम् ।
जगतीतल विख्यातं जगन्नाथ गुरुं भजे ॥

श्री संकर्षण ओडेयरु (1810 - 1862)

मंगळाचरण ध्यान श्लोकगळु

हरिः ॐ श्री गुरुभ्यो नमः

शुक्लांबर धरं विष्णुं शशि वर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशांतये ॥१॥

सर्व विघ्न प्रशमनं सर्वसिद्धि करं परम् ।
सर्व जीव प्रणेतारं वंदे विजयदं हरिम् ॥२॥

ध्यायेन्नृसिंहमुरुवृत्तरवित्रिणेत्रं।
जानु प्रसक्त करयुग्ममथापराभ्याम् ।
चक्रं धरं च दधतं प्रियया समेतं
तिग्मांशु कोट्यधिक तेजसमग्र्य शक्तिम् ॥३॥

अभ्रमं भंग रहितमजडं निमलं सदा ।
आनंदतीर्थमतुलं भजे तापत्रयापहम् ॥४॥

श्री मध्व संसेवन लब्ध शुद्ध-
विद्या सुधांभोनिधयोऽमला ये ।
कृपालवः पंकज नाभ तीर्थाः
कृपालवः स्यान्मयि नित्यमेषाम् ॥५॥

भूदेवीतनयासक्त रघ्वेशपदमानसः ।
नृहर्याख्य गुरुर्भूयादस्मदिष्टार्थ सिद्धये ॥६॥

माधवांघ्रि युगासक्ताः माधवाख्य मुनीश्वराः ।
वितेनुः मध्व तीर्थं ये ददुयुस्तेभीष्ट संततिम् ॥७॥

श्रीमद्रमारमण सद्गिरिपादसंगि-
व्याख्यानिनादमदलिताखिल दुष्ट दर्पं ।

दुर्वादि वारण विदारण दक्षदीक्ष-
मक्षोभ्य तीर्थ मृगराजमहं नमामि ॥८॥

चित्रैः पदैश्च गंभीरैर्वाक्यैर्मानैरखंडितैः।
गुरु भावं व्यंजयंती भाति श्री जयतीर्थवाक् ॥९॥

यद्वृंदावन सेवया सुधिमलां विद्यां पशुं संततिम्
ध्यानं ज्ञानमनल्प कीर्ति निवहं प्राप्नोति शीघ्रं जनः।
तं वंदे नरसिंह तीर्थ निलयं श्री व्यासराट्पूजितम्
ध्यायंतं मनसा नृसिंह चरणं श्रीपादराजं गुरुम् ॥१०॥

अर्थ कल्पि कल्पोयं प्रत्यर्थि गजकेसरी।
व्यास तीर्थ गुरुर्भूयादस्मदिष्टार्थ सिद्धये ॥११॥

तपो विद्या विरक्त्यादि सद्गुणौ घाकरानहं ।
वादिराज गुरून् वंदे हयग्रीव दयाश्रयान् ॥१२॥

मूकोपि यत्प्रसादेन मुकुंद शयनायते।
राज राजा यते रिक्तो राघवेंद्रं तमाश्रये ॥१३॥

****

श्री दासवर्यरु

नमः श्रीपादराजाय नमस्ते व्यासयोगिने ।
नमः पुरंदरार्याय विजयार्याय ते नमः ॥१॥

मन्मनोभीष्टवरदं सर्वाभीष्ट फलप्रदं ।
पुरंदर गुरुं वंदे दास श्रेष्ठं दयानिधिम् ॥२॥

अज्ञान तिमिरच्छेदं बुद्धि संपत्प्रदायकम् ।
विज्ञान विमलं शांतं विजयाख्य गुरुं भजे ॥३॥

आगतादि त्रि कालज्ञं आगमार्थ विशारदम् ।
त्याग भोग समायुक्तं भागण्णार्य गुरुं भजे ॥४॥

दास वर्यं दया युक्तं दूरी कृत दुराशिषम्।
हरि कथामृत वक्तारं जगन्न्वाथ गुरुं भजे ॥५॥

प्राण नाथ पदद्वंद्व पंकजासक्त मानसम् ।
शमादि गुण संयुक्तं श्री प्राणेश गुरुं भजे ॥६॥

गुरु भक्तिमतां श्रेष्ठं गुरुपादावलंबिनम् ।
गुरूपदिष्ट मार्गस्थं गुरु प्राणेश गुरुं भजे ॥७॥

गुरु श्रीशमहं वंदे गुरु तत्व निबोधकम् ।
गुहाशयं गुणातीतं भावयंतं महामतिम् ॥८॥

आपाद मौलि पर्यंतं गुरूणामाकृतिं स्मरेत्।
तेन विघ्नाः प्रणश्यंति सिद्ध्यन्ति च मनो रथाः ॥९॥
पृथ्वी मंडल मध्यस्थाः पूर्ण बोध मतानुगाः ।
वैष्णवाः विष्णु हृदयाः तान्नमस्ये गुरून्मम ॥१०॥

तप्त कांचन संकाशं अक्षमाला कमंडलुम्
दोर्भ्यां दधानं काषाय वसनं राममानसं ।
योगींद्र तीर्थ वन्द्यांघ्रिं तुलसी दाम भूषितं
ज्ञान भक्ति तपःपूर्णं ध्यायेदिष्टार्थ सिद्धये ॥

पूज्याय राघवेंद्राय सत्य धर्म रताय च ।
भजतां कल्पवृक्षाय नमतां कामधेनवे ॥

राम नरहरि कृष्ण कृष्णर - नेमदिंदी मूर्तिगळ पद ।
तामरस भजनॆयनु माळ्परु - कोमलांगरु कठिण परवादि॥
स्तोमगळ महमस्तकाद्रिगॆ - भूमियॊळु पवियॆनिसिदा यति।
याम यामकॆ एल्लरिगॆ शुभ - कामितार्थव कॊडुव गुरुगळ।
नोडिदे गुरुगळ नोडिदे ॥
-- विजय दासरु

श्रीमत्सत्य परायण तीर्थ करकमल संजात
श्रीमत्संकर्षण तीर्थ विरचित कन्नड भाषा ठीका सहित ॥

ऒंदनॆय संधि

मंगळाचरण संधि -- नांदी संधि

मूल:
हरि कथामृत सार गुरुगळ
करुणदिंदापनितु पेळुवे
परम भगवद्भक्तरिदनादरदि केळुवुदु ॥ प ॥

ई मूल ग्रंथ कर्तृगळाद श्री जगन्नाथ दास रायरु तावु माडिद ग्रंथद हॆसरन्नु हेळि, आ ग्रंथदल्लि आदर माडबेकॆंदु

भक्तर प्रार्थना माडुत्तारॆ, मत्तु ई ग्रन्थक्कॆ अधिकारिगळन्नु
हेळुत्तारॆ.

ठीका
हरि - पाप परिहारकनाद सर्वोत्तमनाद श्री परमात्मन,
कथा - सृष्ट्यादि व्यापार रूपवाद कथायंब,
अमृत - अमृतदल्लि तॊगॊयल्पट्ट,
सार - अध्यात्म रूपवाद अनुसंधानाख्य सारवॆंब एंदरॆ श्री देवर प्रस्ताप, श्रवण अमृतक्कॆ (मोक्षक्कॆ) मुख्य साधन. श्री हरि कथॆये देवगुणानुवर्णन अमृतक्किंत रसज्ञरिगॆ रुचिकर.
दधि मधुरं, मधु मधुरं, द्राक्षा मधुरा, सुधापि मधुरैव. मधुरादपि तन्मधुरं मधुरानाथस्य नाम यद्गीतं ॥

एंबुवुदे मॊदलाद अर्थगळु तिळियुत्तवॆ. देवर स्वरूप प्रतिपादकवाद वेदादि हरिकथॆये मोक्षदल्लिय सार, साम गानदिंद आनंदोद्रेकनागुवद्दरिंद मुख्यवॆंदु "एतत्सामगायन्नास्ते" एंब श्रुत्यादिगळिंद ज्ञातवागुत्तदॆ. इंतह ग्रंथवन्नु, गुरुगळ करुणदिंद सच्छास्त्रोपदेशक गुरुगळ तथा जगद्गुरुगळाद श्री मध्वाचार्यर इन्नू तत्वेशरे मॊदलाद गुरुगळ अधीनवाद्दरिंद तम्म हेळुविकॆ कर्तृत्व बहुपराधीनवॆंदु अर्थ. इवरुगळ अनुग्रह बलदिंद,

आपनितु - बुद्धिगॆ तोरिदष्टु एंदरॆ

आचक्ष्व आत्मावगमोत्र यावान् ।
नभः पतंत्यात्मसमं पतत्रिणः ।
तथा समं विष्णुगतं विपश्चितः ॥

एंत यथा शक्ति पक्षिगळु अंतरिक्षदल्लि हारुवुवो हागॆ तम्म तम्म ज्ञान तारतम्यानुसार देवर गुण वर्णिसुवरु जनरु एंब भागवतार्थ इरुवुदरिंद, यथा मति, हेळुववनागुत्तेनॆ. परम भगवद्भक्तरु "नान्यथा ह्यावयोरर्थो राज सेवकयोरिव" एंबंतॆ परस्पर फलापेक्षॆयुळ्ळ दॊरॆ मत्तु आळिन हांगॆ कार्य साधनापेक्षॆ इल्लदे, मोडविद्दुदक्कॆ मयूर कुणिवंतॆ स्वाभाविक निष्कामुकराद भक्तरे ई ग्रंथाभ्यासक्कॆ अधिकारिगळु.
इंथा भक्तरु,

इदन - ई हरि कथामृत साराख्य ग्रंथवन्न,
परमादरदि - विश्वासातिशय, मुखोल्लासादिगळिंद,
केळुवदु - केळोणरागबेकु एंदु तात्पर्य.

हीगॆ परमत निराकरण, स्वमत स्थापन संक्षेपदिंद प्रतिज्ञा वाक्यवॆंत, संधि सूचनॆयॆंदु सहकरिसुव अर्थ पद्यदल्लि हेळि "संक्षेप विस्ताराभ्यां च कथयंति मनीषिणः" एंब न्यायानुसार नांदी संधियॆंब निर्विघ्न प्रचयाद्यनेक फलप्रदवाद मंगळाचरण संधियल्लि श्री परमात्मनारभ्य सकल देवतॆगळु, विष्णु भक्तरु इवरुगळन्नु स्तोत्र माडि ग्रंथ उपक्रमवन्नु माडुतारे.

श्री रमणि कर कमल पूजित
चारु चरण सरोज ब्रह्म स-
मीरवाणि फणींद्र वींद्र भवेंद्र मुख विनुत ।
नीरज भवाण्डोदय स्थिति

कारणनॆ कैवल्यदायक
नारसिंहनॆ नमिपॆ करुणिपुदॆमगॆ मंगळव ॥ १॥

इष्टदेवतॆयू, ग्रंथप्रतिपाद्य देवतॆयू आद गुणपूर्णनाद, श्री नरसिंह देवरन्नु वंदन माडि प्रार्थनॆ माडुत्तारॆ.

श्री = कांति संपन्नळाद, ऐश्वर्य पूर्णळाद,
रमणि = श्री नारायण देवरिगॆ रमणियागिवुळ्ळ, लक्ष्मी देवियर,
करकमल = करगळॆंब कमलद्वयगळिंद,
पूजित = पूजितनादव, अंदरे रमादेवियरु तम्म करगळन्नु सदा परमात्मन पाद सेवॆयल्ले उपयोगिसुतारॆदु तात्पर्य. श्री परमात्मनादरो सर्व सेवा रमा द्वारा स्वीकरिसतक्कव, मत्तु प्रळय कालदल्लियू, शुद्ध लक्ष्म्यात्मक श्री भागदल्लियू रमादेवियरिंदले सेवितनादव. अन्यरिंद सेवितनल्ल. इंथा पूजितवाद,
चारु = मनोहरवाद,
चरण सरोज = चरण कमलगळुळ्ळव (कमलवतु पादगळॆंदु तात्पर्य),
ब्रह्म = चतुर्मुख ब्रह्म देवरु,
समीर = प्रधान वायु देवरु,
वाणि = सरस्वती देवियरु, तथा भारती देवियरु,
फणींद्र = सर्प श्रेष्ठनाद शीष देवरु,
वींद्र = पक्षि श्रेष्ठनाद गरुड देवरु,
भवेंद्र = एकादश रुद्रळोळगॆ श्रेष्ठनाद, पार्वती पतियाद रुद्र देवरु,
मुख = इवरे मॊदलाद समूहगळिंद,
निनुत = स्तुत्यनादव. पूर्वोक्त प्रकार पाद सेवा इवरिगिल्ल. आ स्थानदल्लि इवरिगॆ प्रवेशविल्ल. इंथा पादसेवावुळ्ळवनॆंदु स्तुति मात्रवे, मत्तु अंडद हॊरगॆ ब्रह्मादि देवतॆगळ सृष्टिसिद अनंतर तम्मगळिगॆ आवास स्थानगळु बेकॆंदु स्तुतिसोवरादरु. आद्दरिंद तद्विवक्षया ब्रह्मादिगळिंद विनुत, पादसेवा स्तुत्य एंब एरडु विशेषणगळु. प्रळय कालदल्लि रमा देवियरिंद पाद सेवितनागि, ब्रह्मादिगळिंद विनुतनादवनागि, ई ब्रह्मादिगळिगॆ अवासक्कॆ योग्यवाद,
नीरज = उदकदल्लि उत्पन्नवाव कमल,
भवांड = इदरल्लि उत्पन्ननादव ब्रह्म. इवन देह, इदक्कॆ ब्रह्मांड एंदु सांकेत. इंथ ब्रह्मांडवन्नु,
उदय = सृष्टि माडोदक्केनु मत्तु
स्थिति = पालन माडोदक्केनु,
कारणनॆ = मुख्य कारणनादवने,
कैवल्य दायक = कैवल्य एंबुदु प्रळय कालदल्लि आगतक्कद्दाद्दरिंद, कैवल्य शब्ददिंद प्रळयवन्नू हेळिदंतायितु.
सृष्टि, स्थिति, लय, नियमन, ज्ञान, अज्ञान, बंध, मोक्ष प्रदातृवाद,
नारसिंहने = हे नारसिंह रूपियाद श्री परमात्मने,
नमिपॆ = साष्टांग वंदन माडुवॆ.
एमगॆ = निम्म पाद नंबिद नमगॆ,
मंगळव = अहं ममतादि अमंगळव बिडिसि, दिव्य ज्ञानवन्नू, ऐश्वर्यवन्नू, शुभवन्नू,
करुणिपुदु = करुणदिंद कॊडोवनागु एंदु अर्थ. प्रत्यक्षवागिरुव प्रपंचक्कॆ सृष्टि लयादिगळु मनुष्य यत्न मात्र साध्यवल्लद्दागिरुवद्दरिंद विवेकिगळिगॆ ई जगत्कारण वस्तु ऒंदु इदॆ एंदु तिळिदु बरुत्तदॆ. आ वस्तुवे पर ब्रह्म पदवाच्यनाद तारतम्योपेत सर्वरिंदलू अत्युत्तमनाद, श्री नारसिंहाभिन्न श्री नारायणदेवरु. इवनन्नु निर्दोषनु, ज्ञानानंदाद्यनंत गुण परिपूर्णनु एंदु भजिसबेकॆंत तात्पर्य.

जगदुदरनतिविमल गुणरू-
पगळनालोचनदि भारत
निगमततिगळतिक्रमिसि क्रिया विशेषगळ।
बगॆ बगॆय नूतनव काणुत
मिगॆ हरुषदिं पॊगळि हिग्गुव
त्रिगुणमानि महालकुमि संतैसलनुदिनवु ॥२॥

पूर्वोक्त प्रळय कालदल्लि श्री नारायण देवर पादसेवा माडतक्क, ई परमात्मन विवक्षया न्यूनळाद श्री लक्ष्मी देवियरन्नु स्तोत्र माडुत्तारॆ.

जगदुदरन “उदरं चिंत्यमीशस्य तनुत्वेप्यखिलं भरं“ एंत द्वादशस्तॊत्र प्रमाण इरुवदरिंद, ई वर्तमान स्थावर जंगमात्मक जगत्तेनु मत्तु इन्नू अनंतानंत जगत्तुगळेनु उदरदल्लि उळ्ळ श्री परमात्मन,
अति विमल गुण = अत्यंत निर्दुष्टगळाद, कल्याण गुणगळिंद पूर्णवाद,
रूपगळन = रूपगळन्नु,
आलोचनदि = आलोचनादिंद, ई रमा देवियु जगद्विचार आलोचनॆ इल्लदंतॆ, हस्तगत वस्तुविनंतॆ तिळियुत्ताळॆंतलू, श्री परमात्मन गुणगळु आलोचनॆयिंद कांबुवळॆंतलू अर्थ, इन्नु भारत = नाल्कु वेदगळ भगवद्गुणगळु प्रतिपादिसुव जटिलवागिरतक्क (तन्निमित्तदिंद) एकैक वेदापेक्षया अधिक एंत करिसतक्क, नाल्कु वेद विनक्षया वेदसम एंत करिसतक्क पौरुषेयवाद वेदानुश्रुत्यवाद भारतगत परमात्मन गुणगळेनु,
निगमतकिगळ = वेद समूहगळल्लि विद्यमानवाद गुणगळेनु,
अतिक्रमिसि = ई एरडरल्लि हेळदे इरुव गुणगळल्लि रमादेवियरिगॆ आलोचनॆयिल्ल एंत तात्सर्य.
भारत, वेदगळु एरडर अतिक्रमिसिद गुणगळॆ उपासना कालदल्लि,
क्रियाविशेषगळ = श्री परमात्मन व्यापार विशेषगळ, अतिशयवुळ्ळ,
बगॆ बगॆय = नाना विधवाद,
नूतनव = हॊस हॊसदागि एंदरे गुणतः असमळाद्दरिंद असमनाद श्री परमात्मन गुणोपासनॆ सदा इरॊदिल्ल. भगवदनुग्रहदिंद ऒंदानॊंदु कालदल्लि इरुत्तदॆ. इदु स्वाख्य प्रदेश. इल्लि निद्यमान परमात्मन गुण व्यापार वेद ततिगळल्लि इल्ल. इल्लिन वैचित्र्यने ब्यारॆ. आद्दरिंद इदु रमा देवियरिगॆ नूतनवु. इदुवरॆविगॆ कंडिद्दिल्ल. आद्दरिंदले नूतन नूतनवागि आलोचनॆयिंद,
काणुत = नोडुता होगि, आश्चर्यळागि,
मिगॆ हरुषदिं = तन्न योग्यताक्कॆ मीरिद आनंददिंद, पॊगळि = स्तोत्र माडि,
हिग्गुव = परमानंददिंद, मैमरॆतु, उब्बिदवळाद मत्तु त्रिगुणमानि = जगदुपादानवाद त्रिगुणगळिगॆ अभिमानियाद महालकुमि = ब्रह्मादिगळक्किंतलू श्रेष्ठळाद लक्ष्मि देवियरु,
संतैसलि = संरक्षणॆ माडलि,
अनुदिनवु = प्रति दिनदल्लू एंत अर्थ.

प्रति दिनदल्लू माडतक्क एकादशेंद्रिय जनित कर्मगळल्लि अंतर्गतनागि बिंबरूपी परमात्म इद्दानॆंब ज्ञानवू, भक्तियू, आ प्रकार तिळियोदरल्लि विरक्तियू कॊट्टु लक्ष्मि देवियरु नम्मन्नु संरक्षण माडलि एंत प्रार्थना माडोवरागिद्दारॆंत तात्पर्य.
++++++
निरुपमानंदात्मभव नि-
र्जर सभा संसेव्य ऋजुगण-

दरसॆ सत्व प्रचुर वाणी मुख सरोजेन ।
गरुड शेष शशांक दळ शे-
खरर जनक जगद्गुरुवे त्व-
च्चरणगळिगभिवंदिसुवॆ पालिपुदु सन्मतिय ॥३॥

पूर्वोक्त श्री परमात्मन स्तुति माडिद देवतॆगळ ऒळगॆ श्रेष्ठराद जीवोत्तमराद ब्रह्म देवर स्तोत्र माडतारॆ.

निरुपम = जीवकोटियोळगॆ उपमान रहितनादव, जीवोत्तमनाद (उपलक्षणया २०० मंदि ऋजुगळु ग्राह्यरु),
आनंद = आसुरावेश, भावरूप अज्ञान, अपरोक्ष तिरोधानादि दोष रहितवाद अनंदवुळ्ळव,
आत्म = रमामधुसूदनर व्यतिरिक्त जगत्तिगॆ नियामक स्वामियादव, इन्नॊंदु अर्थ एनॆंदरे
असदृशानंदवुळ्ळ श्री नारायणदेवर पुत्रने,
भव निर्जर सभा संसेव्य = रुद्र देवरे मॊदलाद देवतॆगळ समूहदिंद छंदागि सेवितनादवने,
ऋजु गणदरसे = अज्ञानादि दोषगळॆंब वक्र मार्ग रहितरागि, भगवद्विषयदल्लि सरियाद मार्गवुळ्ळ,
ऋजुसांकेतवाद ब्रह्म पट्टक्कॆ योग्यराद, गणद इन्नूरु मंदि समूहवॊळगॆ,
अरसॆ = पक्व साधनॆ लक्षणदिंद श्रेष्ठनादवने,
सत्व प्रचुर = रुद्राद्यपेक्षया सत्व गुणप्रचुर बहळवागुळ्ळ महत्तत्वात्मक शरीरवुळ्ळवने,
वाणी मुख सरोजेन = सरस्वती देवियर मुखवॆंब कमलक्कॆ,
इन = सूर्य सदृशनादवने, सूर्य तन्न किरणगळिंद कमलवन्नु हयांगॆ विकास माडतानो हांगॆ वाणी मुख कमळ विकास माडतक्क सूर्यस्थानापन्ननादव. रुद्रादिगळल्लि इंथाद्दु इल्ल. कदाचित् दांपत्य प्रतिकूलगळुंटु. दंपतिगळल्लि अंथाद्दु इल्ल. ई विषयदल्लू उपमानरहितनु एंदु अर्थ. इन्नु
गरुड = गरुड देवरु,
शेष =शेष देवरु,
शशांक दळ शेखरर = मृग विशेषदोपादियलि चिह्नेयुळ्ळ चंद्रन षोडश कळादल्लि ऒंदु कळा विशेषदिंद सहितनाद चंद्रने शिरदल्लुळ्ळ रुद्रदेवरु,
जनक = इवरुगळिगॆ तंदॆयादवने, अंदरॆ महत्तत्वक्कॆ मॊदलु ब्रह्मदेवरु अभिमानि आद्दरिंद ई महत्तत्वदिंद अहंकार तत्व हुट्टिद्दरिंद अदक्कॆ गरुड, शेष, रुद्ररु अभिमानिगळु. ई मूरु मंदियू ब्रह्म देवर पुत्रनॆंत अभिप्राय.

“प्रकृत्या पुरुषाज्जीवाः कालो वाग्वायुयोगतः।
सर्पाकारोभवज्जीवः कालोभूत्पक्षि रूपधृक्॥
चतुर्मुखाभांश्चतुरः कुमारान् सा द्रौपदी नाम बभूव भूमौ वैकारिको ब्रह्मजस्तु“
इत्यादि वचनगळु प्रमाण.
जगद्गुरुवे = मुक्ति योग्य जीवरिगॆ मूल गुरु आदवने, एंदरॆ महरादि लोकगत जीवन्मुक्तराद, ब्रह्मांशर्गत उपासना माडतक्क, तन्न संगड मुक्तरागतक्क जीवरिगॆ गुरुवादवने एंत अर्थ. जीवन्मुक्तरल्लद अपक्वरादवरिगॆ वायुदेवरु गुरुगळु. अवरु वाय्वंतर्गत परमात्मन उपासना माडतक्कवरॆंदु अर्थ. जगद्गुरुत्व ब्रह्म वायुगळिगॆ ई रीत्या इरुवुदरिंद जगद्गुरुवे,
त्वच्चरणगळिगॆ = निन्न पाद द्वयगळिगॆ
अभि = छंदागि साष्टांगदिंद,
वंदिसुवॆ = नमस्कार माडुवॆ. बेरिगॆ नीरु हाकिदरॆ अदु शाखोपशाखॆगळिगॆ सेरुवंतॆ, बेरु साम्यवुळ्ळ पादक्कॆ वंदन माडोणदरिंद सर्वावयवगळिगू वंदन माडिदंतागुत्तदॆ. ई प्रकार वंदिसुवॆ.
सन्मतिय = दिव्य ज्ञान भक्त्यादिगळिंद युक्तवाद बुद्धियन्नू, इन्नू ऐश्वर्यवन्नू,

पालिपुदु = कॊडोवनागु.
+++++++++
आरु मूरॆरडॊंदु साविर
मूरॆरडु शतश्वास जपगळ

मूरु विध जीवरॊळगब्जज कल्प परियंत ।
ता रचिसि सात्वरिगॆ सुख सं-
सार मिश्ररिगधम जनरिग-
पार दुःखगळीव गुरु पवमान सलहॆम्म ॥४॥

स्वरूपतः ब्रह्मनिगॆ समानराद, पक्व साधनदल्लि ब्रह्मनिगॆ अवरराद श्री वायुदेवर प्रार्थनॆ माडुतारे.

आरु मूरॆरडॊंदु = इप्पत्तॊंदु (६×३=१८+२+१) एंत अर्थ,
साविर = अंत इप्पत्तॊंदु साविर,
मूरॆरडु शत = आरुनूरु, (३×२) अंतु (२१६००) इप्पत्तॊंदु साविरद आरुनूरु संख्याकवाद,
श्वास जपगळ = नासिका द्वारदिंद बिडतक्क श्वासाख्य आवर्तनगळ,

(श्वास जपगळु ह्यांगॆ आगुतवे एंदरे, श्वासगळु एरडु विध. उच्छावस मत्तु निश्श्वास. उच्छावस एंदरॆ हॊरगिन श्वास ऒळगॆ तॊकॊंबोदु. निश्श्वास एंदरे ऒळगिनिंद श्वास हॊरगॆ
बिडोदु. ई एरडू सेरि ऒंदु श्वासवु. निश्श्वास एंबुदु “हं“ एंब वर्ण विशिष्टवागि हॊरगॆ बरोदागत्तदॆ.
"उच्छावस एंबुदु "स" एंब वर्णदिंद विशिष्टवागि ऒळगॆ होगत्तदॆ. इदरिंद हंस एंत हंस मंत्रवायितु.).
एतादृश मंत्रवन्नु वायु देवरु,
मूरु विध जीवरॊळु = ब्रह्म देवरारभ्य तृणांत मुक्ति योग्यरु (१),
पुरंजन आरंभ माडि तृणांत नित्य संसारिगळु (२), मत्तु
कलि आरंभ माडि तृणांत तमोयोग्यरु (३)

अंतु त्रिविध जीवरु. अवरल्लि ब्रह्म देवरु आरंभ माडि २०० मंदि ऋजुगळल्लि श्वास कार्य श्री परमात्मने वायु रूपदिंद इद्दु माडत्तानॆ. तदन्य रुद्रादि त्रिविध जीवरल्लि श्वास कार्यवन्नु वायु देवरु स्थूल देहदल्लि इद्दु माडतारॆ. ई प्रकार,
अब्जज कल्प परियंत = ब्रह्म कल्पद अंत्यद वरॆगू तावु माडोवरागतारॆ.

त्रिविधरिगू ब्रह्मणा सह मुक्ति. आदरॆ मुक्ति योग्यरिगॆ लिंग भंगवागबेकादरॆ, रमात्मक विरजा नदी कारण.

नित्य संसारिगळिगॆ, तमोयोग्यरिगॆ लिंग भंगवागबेकादरॆ वायुदेवरु कारणवॆंतु तिळियबेकु. वायु देवरु सात्विकरिगॆ सुख, राजसरिगॆ मिश्र सुख, तामसरिगॆ दुःख. ई प्रकार कॊडतक्क त्रिविध प्रकारवाद हंस मंत्र जप माडतारॆ.

ता रचिसि = ई जपवन्नु तावु ऒब्बरे माडतारॆ हॊरतु अन्यराद रुद्रादि देवतॆगळिगॆ
अधिकारविल्लवाद्दरिंद, तावे रचना माडि,
सत्वरिगॆ = मुक्ति योग्यराद जीवरिगॆ,

सुख = लिंग भंगानंतर वैकुंठादिगळल्लि सुख,

संसार मिश्ररिगॆ = नित्य संसारिगळिगॆ सुख-दुःख एरडू कलॆत सुख,
अधम जनरिगॆ = अधमराद तमोयोग्यरिगॆ,
अपार दुःखगळीव = लिंग भंगानंतर अंत्य रहितनाद दुःख स्वरूपराद दैत्यरिगॆ नित्य दुःखगळ कॊडतक्क,
गुरु पवमान = जीवोत्तमराद वायुदेवरे,
एम्म = नम्मन्नु,
सलहु = दिव्य ज्ञानवन्नु कॊट्टु संरक्षण माडिरि.

विशेषार्थ :
(१) हंस एंब शब्ददिंद “नित्यं हीनोऽखिळैः दोषैः सार रूपो यतो हरिः“॥ एंत मुक्ति योग्यर उपासन.

(२) इदे हंस मंत्रदिंद तमो योग्यरु वर्ण व्यत्यासदिंद सोहं एंत उपासन माडतारॆ.

(३) नित्य संसारिगळु स्वाहा एंत उभयक्कू संबंधपडद संदेह ज्ञानदिंद उपासन माडतारॆ.

त्रिविध जीवर सृष्टि एंबुदु अवरवर स्वरूपद अभिव्यक्तिगागियॆ हॊरतु अन्यकारणवल्ल. आद्दरिंद लिंग भंगानंतर त्रिविधरिगॆ त्रिविधगति आगतदॆ. वायुदशादल्लि त्रिविधजीवरन्न जीवन्मुक्तरन्नागि माडि, ब्रह्मदशादल्लि लिंगभंगरन्नागि माडतानॆ. विरजा स्नानदिंद मुक्ति योग्यरिगॆ, वायुपदक्कॆ बंद वायुदेवरिंद नित्य संसारि तमो योग्यरिगॆ लिंगभंग विधिसतारॆ.

“मुक्ति योग्यानां तु यल्लिंगं गदया व्यपोहति. नित्य संसारिणां तु यल्लिंगं हूंकारेण विनश्यति॥“ इति वायुप्रोक्तॆ. ई प्रकार प्रमाणगळु इवॆ.

चतुरवदनन राणि अतिरो-
हित विमल विज्ञानि निगम
प्रततिगळिगभिमानि वीणापाणि ब्रह्माणि ।
नतिसि बेडुवे जननि लकुमी
पतिय गुणगळ तुतिपुदकॆ स-
न्मतिय पालिसि नॆलॆसु नी मद्वदन सदनदलि ॥ ५॥

सरस्वती देवियर प्रार्थना माडतारे.

चतुर वदनन राणि = चतुर्मुख ब्रह्मदेवर पत्नियादवळे, अतिरोहित = तिरोधानविल्लदंथा,
विमल = निर्दोषवाद,
विज्ञानि = रुद्राद्यपेक्षया विशेषवाद ज्ञानवुळ्ळवळे,
निगम प्रततिगळिगॆ = निगम = अनंत वेदगळॊळगॆ विभागमाडि, प्र = छंदागि, ततिगळिगॆ = गुंपागि कूडिरतक्क पठ्यमान वेदसमूहगळिगॆ,
अभिमानि = अभिमानियादवळे,
वीणापाणि = कच्छपी नामक वीणावन्नु करदल्लि उळ्ळवळे,
ब्रह्माणि = पुनरुक्ति परिहारार्थ परतत्वोपदेशकळाद्दरिंद ब्रह्माणि पद प्रयोगवु,

नतिसि = वंदनमाडि, स्तोत्र माडि,
बेड्वे = याचन माड्वॆ,
जननि = सृष्टि कर्तनाद ब्रह्म देवर पत्नियाद्दरिंद लोकक्कॆ तायियॆंत करिसतक्कवळे,
लकुमीपतिय = लक्ष्मी पतियाद, श्री नारायण देवर,
गुणगळ = सृट्यादि गुणगळ,
तुतिपुदकॆ = स्तौत्र माड्वुदक्कॆ,
सन्मतिय = निर्मलवाद, अचंचलवाद बुद्धियन्न,
पालिसु = कॊडोवळागु,
नी = नीनादरो वाक्यगळिंद छंदागि स्तोत्र माडिसोदक्कागि, मद्वदन = नन्न मुखगतवॆंब,
सदनदलि = मनॆयल्लि,
नॆलसु = आवासळागिरु.

कृति रमण प्रद्युम्न नंदनॆ
चतुर विंशति तत्वपति दे-
वतॆगळिगॆ गुरुवेनिसुतिह मारुतन निजपत्नि।
सतत हरियलि गुरुगळलि स-
द्रतिय पालिसि भागवत भा-
रत पुराण रहस्य तत्वगळरुपु करुणदलि ॥६॥

भारती देवियर स्तोत्र माडतारॆ.

कृति रमण = कृति नामक लक्ष्मी देवियर पतियाद, प्रद्युम्न नंदनॆ = प्रद्युम्न नामक श्री नारायण देवरिंद, अंडद हॊरगॆ सूक्ष सृष्टि कालदल्लि पुत्रियागि जनिसिदवळे,
चतुर विंशति तत्वपति = इप्पत्तु नाल्कु तत्वगळिगॆ अभिमानिगळाद,
देवतॆगळिगॆ = रुद्रादि देवतॆगळिगॆ,
गुरुवॆनिसुतिह = नियामक स्वामियॆंत एनिसुत, चतुर विंशति तत्वगळल्लिरतक्क,
मारुतन = अंडद हॊरगॆ
सूक्ष्म सृष्टि कालदल्लि जयापति संकर्षण नामक परमात्मन दॆसॆयिंद पुत्रत्वेन जनिसिद श्री वायुदेवर,
निज पत्नि = नियतवागि पत्नियागि इरतक्कवळे, (अंदरॆ अन्यराद देवतॆगळिगॆ अवतारगळल्लि पत्नियर भेदिसोण उंटु. ई भारती देवियरु हागॆ भेदिसि इरतक्कवळल्ल एंत तात्पर्य.).

इंतह भारति देविये (अज्ञानियाद नम्मल्लि),
करुणदलि = परमांतः करुणदिंद,
सतत = निरंतरदल्लू,
हरियलि = गुण पूर्णनाद श्री नारायणदेवरल्लि,
गुरुगळलि = निन्न पतियाद जगद्गुरुगळाद श्री वायुदेवरल्लि,
सद्रतिय पालिसि = सत् = दोष रहितवाद, तारतम्य, पंचभेदगळ समीचीन ज्ञान, भकुति, वैराग्य पूर्वक,
रतिय = आसक्तिय,
पालिसि = कॊट्टवळागि,
भागवत = श्री भागवतद,
भारत = वेद तुल्यवाद श्री महा भारतद,

पुराण रहस्य तत्वगळ = पुराणगळल्लि गर्भीभूतवाद रहस्यवाद, तत्वगळ = श्री भगवत्तत्वगळ, अरुपु = तिळिसोवळागु एंत प्रार्थने माडोवरागिद्दारॆ एंत
तात्पर्य.
++++++++++++

वेदपीठ विरिंचि भव श-
क्रादि सुरविज्ञानदायक
मोद चिन्मय गात्र लोक पवित्र सुचरित्र।
छेद भेद विषाद कुटिलां-
तादिमध्य विदूर आदा-
नादि कारण बादरायण पाहि सत्राण॥७॥

श्री वेदव्यास देवर प्रार्थना माडतारॆ.

म्यालॆ प्रार्थना माडिद्दु मूल रूप विवक्षादिंद, मूलरूपगळाद, अंशि रूपगळ प्रार्थना माडि, ईग अवतार रूपगळाद अंशरूपगळ विवक्षा माडि प्रार्थिसुत्ताराद्दरिंद पुनरुक्ति दोषविल्ल. मॊदलु श्री वेदव्यास देवर प्रार्थन माडुवुदु याकॆ एंदरॆ गारुडे ब्रह्मकांडे सूतः --

विष्णॊरनंतरं व्यास नमनं मुख्यमेव हि। हरिरेव यतो व्यासो वाच्य वक्तृ स्वरूपकः। व्यत्यासेनैव नम्यत्वं मयोक्तं भवतो हरेः। तत्रापि कारणं वक्ष्ये सादकेण मुनीश्वराः। व्यासस्तु कश्चन ऋषिः पुराणे तामसे स्मृतः। इति ज्ञानावलंबेन दैत्या दैत्यानुगाः सदा॥

एंत प्रमाण इरुवदरिंद मत्तु वेदगळु, पुराणगळु इवुगळल्लिरुव तत्त्वार्थगळन्नु बादरायण देवरु निर्णय माडिद्दरिंदलू, वेदव्यास देवरन्न प्रार्थना माडतारॆ. श्री वेदव्यास देवरु एंतहवरॆंदरे --

वेद पीठ = वेदगळु आसनवागि उळ्ळवरु रमादेवियरु, भारत निगम ततिगळ अतिक्रमिसिद गुणगळ उपासना माडतक्कवळाद्दरिंद वेदगळु पीठ रूपवायितु. भगवद्गुणगळ उपासनक्कॆ वेदद अगत्यविल्ल. ऋजुगळिगॆ
वेदवु संवाद रूपवाद म्यालॆ रमादेवियरिगॆ हेळतक्कद्देनिदॆ ?
वेद पीठ = रमादेवि,
विरंचि = ब्रह्मदेवरु,
भव = रुद्र देवरु,
शक्रादि सुर = इंद्र देवरे मॊदलाद देवतॆगळिगॆ,
विज्ञान दायक = वि = विशेषाकारवागि, ज्ञान =
ज्ञानवन्नु, दायक = कॊडतक्कवनु. रमादेवियरिगॆ विशेष ज्ञान दावदॆंदरॆ, पूर्वोक्त प्रकार नूतनवागि काणोणवे.

तदन्यराद ब्रह्मादिगळिगॆ साधन परिपाकानुसार विशेष ज्ञानदायकनु. इन्नू एंतहवनॆंदरॆ,
मोद = आनंद,
चित् = ज्ञान, ई एरडरिंद,

मय = तन्मयवाद,
गात्र = शरीरवुळ्ळवनु (एंदरॆ असदृशवाद ज्ञानानंद शरीरवुळ्ळवनु एंत तात्पर्य). इन्नु
लोक पवित्र = त्रिविध जीवरु, लिंगभंगदिंद स्वरूप व्यक्ति इल्लदे अपवित्ररागि इद्दारॆ. इंथावरल्लि मुक्ति योग्य जीवरिगॆ लिंग भंग रूपवाद पावित्र्यवन्न्न माडतक्कव.
सुचरित्र = मंगळ रूपवाद चरित्रॆ उळ्ळव.
छेद = आयुधदिंद छेदवू,
भेद = परिमितियु, इष्टु एंत भेदिसोणवु,
विषाद = व्यसनवु,
कुटिल = वैषम्यादिकपटवु,
अंत = अंत्यभागवु,
आदि = आदि भागवु,
मध्य = मध्य भागवु, इवुगळिंद,
विदूर = अत्यंत दूरनादवनु,
अनादि कारण = आदि रहितवाद सृष्ट्यादिगळिगॆ निमित्त कारणनादवनु,
बादरायण = "वेदवादरतानां वादिनामाश्रयत्वाद्भादरायणः। बदराणां संबंधि यत् बादरं तत् अयनं स्थानं यस्य सः तथोक्त इति वा बादरायणः॥".

एंत इरुवदरिंद इंथा वेदव्यास देवरे,
सत्राण = सत् = समीचीनवाद निन्न भजनॆगॆ दार्ढ्य रूपवाद, त्राण = शक्तियन्नु कॊट्टु,
पाहि = संरक्षण माडु एंत प्रार्थने माडोवरागिद्दारॆ एंत तात्पर्य.
++++++++++
क्षितियॊळगॆ मणिमंत मॊदला-
दति दुरात्मरु ऒंदधिक विं-
शति कुभाष्यव रचिसॆ नडुमनॆयॆंब ब्राह्मणन ।
सतिय जठरदॊळवतरिसि भा-
रति रमण मध्वाभिधानदि
चतुर दश लोकदलि मॆरॆद प्रतिमगॊंदिसुवे॥८॥

श्री वायुदेवर अवतारवाद श्री मध्वाचार्यरिगॆ वंदन
माडतारे.

क्षितियॊळग्गॆ = ई भरत खण्डद भूमियल्लि,
मणिमंत मॊदलाद = मणिमंतने मॊदलाद दैत्यरु,
अति दुरात्मरु = इवरु भगवद् द्वेषिगळु, दुष्ट स्वभाव उळ्ळंथावरु. इवरु हुट्टिदवरागि,
ऒंदधिकविंशति = (२१) इप्पत्तॊंदु संख्याकवाद,
कुभाष्यव = हरिसर्वोत्तम एंब वेदार्थक्कॆ विरुद्धवाद, दुष्टवाद भाष्यगळ,
रचिसॆ = रचना माडिरलागि, अदर खण्डनॆगॆ,
नडु मनॆयॆंब = मध्यगेह एंत नामवुळ्ळ,
ब्राह्मणन = ब्रह्म ज्ञानियाद ब्राह्मणन,
सतिय = पत्नियाद वेदवती देविय,
जठरदॊळु = उदरदोळु,

इदद्दु = जनिसिदंतॆ प्रदर्शन माडि, तत्कालदल्लि,
अवतरिसि = मूल रूपदिंद अंशत्वेन हॊरट्टु अवतार माडि,
भारती रमण = भारती देवियवरिगॆ पतियाद श्री वायुदेवरु, अनंतर आश्रम धरिसि,
मध्वाभिधानदि = "मध्वित्यानंद उद्दिष्टो वेति तीर्थमुदाहृतं। मध्व = आनंद तीर्थश्च तृतीया मारुती तनुः॥" एंत तैत्तिरीय भाष्यदल्लि इरुवदरिंद इंथा मध्वाचार्यरु एंब नामदिंद,
चतुर्दश लॊकदलि मॆरॆद = हदिनाल्कु लोकगळल्लि मॆरॆदु कीर्तिपेत्त,
अप्रतिमगॆ = इप्पत्तॊन्दु भाष्य निराकरिसि, हरि सर्वोत्तमनॆंदु स्थापन माडिद विषयदल्लि सदृश रहितराद मध्वाचार्यरिगॆ,
वंदिसुवॆ = साष्टांग नमस्कार माडुवॆ एंत तात्पर्य.

++++++++

पञ्च भेदात्मक प्रपञ्चकॆ
पञ्च रूपात्मकनॆ दैवक
पञ्च मुख शक्रादिगळु किंकररु श्री हरिगॆ ।
पञ्च विंशति तत्त्व तरतम
पञ्चिकॆगळनु पेळद भावि वि-
रिंचियॆनिपानंद तीर्थर नॆनॆवेननुदिनवु ॥९॥

ई पूर्वोक्त मध्वाचार्यरु दुर्मत निराकरण पूर्वक स्वसिद्धान्त स्थापन माडिदुदन्नु संग्रहवागि हेळतारॆ.

पञ्चभेद = ऐदु भेद, अदु दावॆंदरॆ

(१) जीव जीवरिगॆ भेद,
(२) जड जडक्कॆ भेद,
(३) जीव जडक्कॆ भेद,
(४) जड परमात्मगॆ भेद,
(५) जीव परमात्मगॆ भेद.

जड शब्ददिंद जड जीवरु शुद्ध जडगळु ग्राह्य. इदु ऐदु क्षरदल्लि भेद. अक्षरदल्लि लक्ष्मिगू, श्री नारायण देवरिगू भेद उंटु. इदु संध्यन्तरदल्लि विदितवागिदॆ. मत्तु अस्वतंत्र लक्षणया जीव समूहदल्लि गणन माडिदरे ऐदु भेदवे आगतदॆ. अक्षर लक्षणया आरने भेदवुळ्ळवळॆंदु करिसताळॆ. उभय लक्षणावू इरोणदरिंद दाव प्रकार तिळिदरू विरुद्धवल्ल. ई प्रकार पञ्च भेददिंद,

आत्मक = युक्तवाद,
प्रपञ्चकॆ = छंदागि ई ऐदरिंद सहितवाद ई जगत्तिगॆ,
पञ्च रूपात्मकनॆ दैवक = अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, संकर्षण, वासुदेव, नारायण, एंतु ऐदु रूपगळु उळ्ळ, गुण पूर्णनाद, आत्म नामक श्री परमात्मने, मत्तु ई परस्पर रूपगळल्लि अत्यंत अभेदात्मकवाद सृष्ट्याद्यष्ट कर्तृवादवनु श्री नारायण देवरे. ई नारायण देवरिगॆ,
पंचमुख = श्री हरि सर्वोत्तमनॆंदु स्थापना माडोवराद मध्वाचार्यरु (भावि ब्रह्मराददरिंद उपलक्षणया ब्रह्म देवरु ग्राह्यरु) ब्रह्मदेवरु मत्तु ऐदु मुखवुळ्ळ रुद्रदेवरु,

शक्रादिगळु = इंद्रादि यावत्तू देवतॆगळु, इवरु,
किंकररु = सेवा माड तक्कवरु,
श्री हरिगॆ = श्रीहरिगॆ एंतलू, मत्तु
पंच विंशति तत्व = इप्पत्तैदु तत्व, अवु दावदॆंदरॆ = दशेंद्रियगळु, पंचभूत, पंच तन्मात्रगळु, मनस्सु, महत्तत्व, अव्यक्त तत्व, अहंकार तत्व, अंतु (२४) इप्पत्तु नाल्कु तत्व आयितु. २५-नॆ तत्व श्री परमात्म, अदर म्यालॆ तत्वविल्ल. ई चतुर्विंशति तत्वान्तर्गतनु श्री परमात्मनु. इंतह इप्पत्तैदु तत्वगळु ह्यांगॆ,
तरतम = स्वोत्तम, स्वावर तारतम्यवन्नु,
पंचिकेगळनु = पंचदिंद सहितवादुदु पंचकी = जगत्तु पूर्वोक्त प्रकार पंच भेददिंद युक्तवाददद्दु, एंत,
पेळ्द = वेद शास्त्रादि सम्मतिगळिंद स्थापन माडि हेळिदंतह, भावि विरिंचियॆनिप उत्तर ब्रह्म कल्पक्कॆ ब्रह्म देवरु आगतक्कवरॆंदु एनिसतक्क, आनंद तीर्थर ---

आनंद रूपस्य परस्य पात्र धीरानंद संदायि सुशास्त्रकृत्स यत्। आनंद तीर्थेति पदं गुरूदितं बभूव तस्यात्यनुरूपरूपकं॥

एंत मध्व विजयोक्ति इरुवदरिंद संतोषकरवाद शास्त्रवुळ्ळ मध्वाचार्यर,
अनु दिनवू = प्रति दिनदल्लू,
नॆनॆवे = स्मरणॆ माडुवॆ. दिव्य ज्ञानवन्नु कॊट्टु संरक्षिसलि एंत प्रार्थने माडोवरागिद्दारॆ एंत तात्पर्य.
++++++++
वामदेव विरिंचितनय उ-
मा मनोहर उग्र धूर्जटि
सामजाजिन वसन भूषण सुमनसोत्तंस।
काम हर कैलास मंदिर
सोम सूर्यानल विलोचन
कामितप्रद करुणिसॆमगॆ सदा सुमंगळव ॥१०॥

श्री वायु देवरिगॆ अवरराद (तारतम्यदल्लि नीचराद) मनोभिमानियाद श्री रुद्र देवरन्नु, ई श्लोकदिंदलू, मत्तु उत्तर श्लोकदिंदलू स्तोत्र माडतारॆ.

वामदेव = गारुडे ब्रह्मकांडे "ईशान्यकोणे संस्थितो यस्तु रुद्रो ह्यवाप देवो वामदेवेति संज्ञाम्। स्ववामभागे संस्थितं वासुदेवं स्वयोग्य भक्त्या पूजते सर्वदैव। अतो रुद्रो वामदेवेति संज्ञां ह्यवाप ज्येष्ठत्वमथोत्तमत्वं॥

एंत उक्ति इरुवुदरिंद इंतह रुद्र देवरे, इन्नू
विरंचि तनय = ब्रह्म देवर भ्रू मध्यदिंद जनिसिदवरे,
उमा मनोहर = पार्वति देवियर मनस्सन्नु संतोष पडिसिदवरे,
उग्र = जगत्संहार माडतक्क क्रूरवाद कार्य उळ्ळवरे,
धूर्जटि = धूम्र वर्णदोपादियलि जटॆगळुळ्ळवरे,
समज = गजद,
अजिन = चर्मवे,
वसन भूषण = वस्त्रवागि अलंकरिसि कॊंडवरे,
सुमनस = इंद्रादि देवतॆगळ दॆसॆयिंद,

उत्तंस = उत्तमरादवरे, उत्तमवाद भुज पराक्रम उळ्ळवरे,
काम हर = तपो विघ्न माडिद मन्मथनन्नु नेत्राग्नियिंद भस्म माडिदवरे,
कैलास मंदिर = कैलास पर्वतदल्लि मनॆयुळ्ळवरे,
सोमसूर्यानल = सोम = चंद्र किरणगळोपादियलि शांतकरवाद एडनेत्र, सूर्य = सूर्य किरणगळोपादियलि तेजोबाहुळ्य उळ्ळ शांति रहितवाद बल नेत्र, अनल = अग्नियोपादियलि दाहक शक्ति वुळ्ळ मध्यगत नेत्र, अंतु ई प्रकार,
विलोचन = विशेषदिंद युक्तवाद नेत्र त्रयवुळ्ळवरे,
कामितप्रद = बेडिद इष्टार्थगळ तमगॆ कॊडोदक्कॆ योग्यता एष्टु इदॆयो अष्टु मात्र कॊडतक्कवरे,
सदा = निरंतरदल्लू,
एमगॆ = नमगॆ, इन्नू श्री हरि भक्तरिगॆ,
सुमंगळव = समीचीनवाद, भेद ज्ञान रूपवाद मंगळवन्नु, ऐश्वर्यवन्नु,
करुणिसु = आंतःकरणदिंद कॊडोवनागु एंत प्रार्थिसोवरागिद्दारॆ एंत तात्पर्य.

+++++++++

कृत्ति वासनॆ हिंदॆ नी ना-
ल्वत्तु कल्प समीरनलि शि-
ष्यत्व वहिस्यखिळागमार्थगळोदि जलधियॊळु।
हत्तु कल्पदि तपव गैदा-
दित्यरॊळगुत्तमनॆनिसि पुरु-
षोत्तमन परियंक पदवैदिदॆयो महदेव ॥११॥

ई रुद्र देवरु शेष पदक्कागि साधन माडिद्दु हेळि, शेष देवर स्तॊत्रवन्नू ई श्लॊकदिंदले हेळतारॆ.

कृत्ति वासने = मृग चर्मवे वस्त्रवागि उळ्ळ रुद्रदेवरे,
हिंदॆ = वर्तमान ब्रह्म कल्पक्कॆ हिंदॆ गतवाद पूर्व ब्रह्म कल्पवाद ऒंदु कल्पदल्लि,
नी नाल्वत्तु कल्प = नी नाल्वत्तु संख्याकवाद ब्रह्मन दिन कल्पगळल्लि,
समीरनलि = श्री वायुदेवरल्लि,
शिष्यत्व वहिसि = शिष्यनागि इद्दु,
अखिलागमार्थगळ = योग्यताक्कॆ अनुसरिसिद समस्तवाद वेदगळु, अदर आर्थगळु, इवुगळन्न
ओदि = ओदिदवरागि, अनंतर,
जलधियॊळु = लवण समुद्रदल्लि,
हत्तु कल्पदि = हत्तु संख्यातवाद ब्रह्म देवर दिन कल्पगळल्लि,
तपव गैदु = मुळुगिद्दु तपस्सन्नु माडिदवरागि, अनंतर, आदित्यरोळु = देवतॆगळॊळु,
उत्तमनॆनिसि = श्रेष्ठ एंत एनिसिकॊंडवरागि, वर्तमान रुद्र पदक्कॆ बरोवरादिरि एंत रुद्र देवर स्तॊत्र.
इदरिंदले शेष देवर स्तोत्रवु. हेगॆंदरॆ,
पुरुषोत्तम = क्षराक्षर पुरुषरिंद श्रेष्ठनाद श्री नारायण देवर,
परियंक पद = मंचवागि इरतक्क ऐश्वर्यवन्न,
ऐदिदॆयॊ = वर्तमान परियंक रूपवाद शेष देवरे पूर्वोक्त प्रकार साधनॆ माडि शय्यारूप पदव पडॆदिदिरि एंत शेष देवर स्तुति.

महदेव = हे रुद्रदेवरे नीवू उत्तर कल्पक्कॆ देवर परियंक पदव पडॆयुववरागुत्तीरि एंत रुद्रदेवर स्तोत्र. रुद्र गण ब्यारॆ, शेष गण ब्यारॆ, इल्लवाद्दरिंद रुद्र पददिंदले शेष पद हॊंदबेकु. आद्दरिंद क्षीर नीरु मिश्रदंतॆ स्तोत्र माडल्पट्टिदॆ. इदर विस्तार अपरोक्ष तारतम्य संधियल्लि विवर माडिद्देवॆ, तिळियबहुदु.

पाक शासन मुख्य सकल दि-
वौकसरिगभिनमिपॆ ऋषिगळि-
गेक चित्तदि पितृगळिगॆ गंधर्व क्षितिपरिगॆ।
आ कमलनाभादि यतिगळ
नीकका नमिसुवेनु बिडदॆ र-
मा कळत्रन दासवर्गकॆ नमिपेननवरत ॥१२॥
इंद्र देवरु मॊदलु माडि यावतू भगवद्भक्तरिगू वंदन माडि
स्तोत्र माडतारे.

पाक शासन = पाकनॆंब असुर हंतृवाद इंद्र देवरे मॊदलाद शतस्थ देवगणांत,
मुख्य = मुख्यवाद, तत्वाभिमानिगळाद,
सकल दिवौकसरिगॆ = समस्तराद देवतॆगळिगॆ,
एकचित्तदि = अचंचलवाद स्थिर चित्तदिंद,
ऋषिगळिगॆ = (ऋषि सांकेतदिंद कर्मज देवतॆगळु पुष्करांतवरेगू अमुख्य तत्वाभिमानिगळु विवक्षितरु), कर्मजरल्लि प्रविष्टराद ऋषिगळु आरंभ माडि पुष्करांत देवतॆगळिगॆ,
पितृगळिगॆ = (अजानजरल्लि सेरिदवरु पितृगळु. पितृ शब्द सांकेतदिंद पुष्करन अनंतर अवरराद देव गंधर्वर परियंत अजानजरु ग्राह्य) अजानजर समेतवागि पितृ देवतॆगळिगॆ, इल्लिगॆ मूवत्तु मूरु कोटि देवतॆगळन्नु हेळिदंतायितु, इवरुगळिगॆ,
अभिनमिपे = छन्दागि वंदन माडुवॆ.
गंधर्व क्षितिपरिगॆ = मानुष गंधर्वरु, हागू मानुष चक्रवर्तिगळु इवरुगळिगॆ,
आ कमलनाभादि = आ एंदरॆ पूर्वोक्त मध्वाचार्यर शिष्यरुगळे मॊदलाद,
यतिगळ = पद्मनाभ तीर्थरु, अक्षोभ्य तीर्थरु, ठीकाचार्यरु, वादिराज स्वामिगळु, व्यास रायरु, श्रीपादरायरु, राघवेंद्र स्वामिगळु, प्राज्ञ तीर्थरु, मॊदलाद यति (श्रेष्ठराद, काम्यकर्म त्यागिगळ,
नीकक्कॆ = समूहक्कॆ,
आनमिसुवॆनु = छंदागि वंदन माडुवॆनु.
बिडदे = विस्मृतियिंद बिडदे,
अनवरत = निरंतरदल्लू,
रमाकळत्रन = रमा पतियाद श्री हरिय,
दासवर्गकॆ = पुरंदरदासरु, विजयदासरु, भागण्णदासरु मॊदलाद दासकूट समूहक्कॆ,
नमिपॆ = नमस्कार माडुवॆ (अंतर्गत श्री परमात्मन तिळिदु वंदिसुवॆ एंत अर्थ. नीचाधिष्ठानदलि, अंतर्गतनन्नु तिळिदरू वंदनॆगॆ अर्हनल्ल. उत्तमाधिष्ठानदल्लि अंतर्गतवन्नु तिळियदिद्दरे वंदनार्हवल्ल एंत तात्पर्य)

++++++++

परिमळवु सुमनदॊळगनलनु-
अरणियॊळगिप्पंतॆ दामो-

दरनु ब्रह्मादिगळ मनदलि तोरितोरदलॆ ।
इरुतिह जगन्नाथ निठ्ठलन
करुण पडॆव मुमुक्षु जीवरु
परम भागवतरनु कॊंडाडुवुदु प्रतिदिनवु॥१३॥

सर्वरू भगवद्भक्तरन्नु कॊंडाडबेकु एंत हेळि, चराचरदल्लि श्री परमात्मन व्याप्ति प्रकारवन्नु हेळतारे.

परिमळवु = सुवासनॆयु,
सुमनदॊळु = पुष्पदॊळगॆ,
अनलनु = अग्नियु,
अरणियॊळु = काष्ठ विशेषदॊळु,
इप्पंतॆ = इरुवंतॆ,
दामोदरनु = गुणपूर्णनाद श्री नारायण देवरु,
ब्रह्मादिगळ = जीवोत्तमराद ब्रह्म देवरे मॊदलाद यावत्तु स्थावर जंगम जीवरुगळ,
मनदलि = मनवॆंब अधिष्ठानदल्लि,
तोरि = पुष्पगत परिमळ पुष्प आरळिदरॆ, नासिकेंद्रक्कॆ तोरुवुदागुत्तदॆ, काष्ठ मथन माडिदरे अग्नि कण्णिगॆ तोरुत्तदॆ. हागॆये अहं ममतादिगळिंद मुकुळितभाववन्नु हॊंदिरुव मनवॆंब पुष्प, ज्ञान, भकुति, वैराग्य इवुगळिंद विकसितवादरे परिमळक्कॆ समनाद परमात्म तन्न रूप तोरि उद्धार माडतानॆ, (आद्दरिंद मॊदलु अहं ममतादिगळन्नु त्याग माडबेकु. नंतर ज्ञान भक्ति वैराग्यगळिंद मनस्सॆंब पुष्पवन्नु विकासगॊळिसबेकु) मत्तु काष्ठ मथनदंतॆ मनस्सिनिंद परमात्मन कल्याण गुणगळ विचार रूप मथन माडिदरे काष्ठगत अग्नि प्रत्यक्षनादंतॆ तानु कण्णिगॆ तोरि उद्धार माडतानॆ.
तोरदलॆ = पूर्वोक्त प्रकार माडदवरिगॆ प्रत्यक्षवागदलॆ अवरवर हृदयदलि पुष्पगत परिमळदंतॆ, काष्ठगत अग्नियंतॆ अव्यक्तनागि काणिसिकॊळ्ळदे ब्रह्मादिगळ मनदलि,
इरुतिह = इरतक्क,
जगन्नाथ विठ्ठलन = जगत्तिगे स्वामियागि पाप परिहारकनागि विठ्ठल रूपियाद श्री बिंब रूपि परमात्मन, करुण पडॆव = अंतः करण हॊंदतक्क,
मुमक्षु जीवरु = मोक्षापेक्षिगळाद जीवरुगळु,
परम भागवतरन = उत्तमराद भगवद्भक्तरन्नु,
प्रति दिनवु = प्रति दिनदल्लू,
कॊंडाडुवदु = कूडिकॊंडु संचरिसोवरागबेकु एंत अर्थ.

विशेषार्थ --
कुसुमदल्लि परिमळवु इरुव हागॆ, अरणियल्लि अग्नि इरुव हागॆ, ब्रह्मादिगळ मनस्सिनल्लि काणिसिकॊंडु साकल्येन गॊत्तागदे, भक्ति निमित्त यशोदा देवियिंद दामबद्ध उदरदल्लि श्री कृष्ण इरोवनागिद्दानॆ. इंतह ज्ञानप्रद स्वामिय दय संपादिसुव मोक्षाकांक्षिगळु पूर्वोक्त परम भागवतराद ब्रह्मादिगळन्नु सदा तारतम्य क्रमदिंद स्तुतिसतक्कद्दॆंत तात्पर्य. पुष्पगत दृष्टांतदिंद कार्यभूत ई जगत्तिगॆ कारणभूत देवरु इद्दानॆ एंत श्रुति, स्मृतिगळिंद तिळिसिदरु. अरणिगत अग्नि प्राप्तिगॆ मथनदंते गुरु सेवा शास्त्राभ्यास मॊदलाद सेवा हॊरतु देवरु दॊरकुवदिल्ल एंत अर्थ तिळिसुवुदक्कॆ एरडु दृष्टांत कॊट्टिद्दारॆ एंत तात्पर्य.

श्रीमत्सत्य परायण तीर्थ कर कमल संजात श्रीमत्संकर्षण तीर्थ विरचितायां श्रीमद्धरिकथामृतसार कन्नड भाषा ठीकायां मंगळाचरण अथवा नांदी संधि व्याख्यानं संपूर्णं.

श्री भारती रमण मुख्य प्राणांतर्गत श्री लक्ष्मी नृसिंहः प्रीयतां ॥

॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

कृष्णाचार्यः
चेन्नै
9443923584